CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

वरिष्ठ नागरिकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर शारीरिक दुर्व्यवहार के प्रभावों का विश्लेषण

पार्वती शर्मा
शोधार्थी
डॉ नीते मेहता
शोध निदेशक, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर
Email-parvatimahesh1982@gmail.com, *Mob- 0000000000*

First draft received: 16.10.2024, Reviewed: 27.10.2024, Final proof received: 15.11.2024, Accepted: 15.12.2024

सार-संक्षेप

इस शोध प्रपत्र में मैंने विषय ''वरिष्ठ नागरिकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर शारीरिक दुर्व्यवहार के प्रभावों का विश्लेषण'' का यथासंभव वर्णन किया है। वरिष्ठ नागरिकों पर शारीरिक शोषण के प्रभाव बहुआयामी और दूरगामी होते हैं, जिसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों पर विनाशकारी परिणाम होते हैं। शारीरिक शोषण के परिणामस्वरूप गंभीर चोटें, पुराना दर्द और शारीरिक कामकाज में कमी हो सकती है, जिससे समग्र स्वास्थ्य में गिरावट और मृत्यु दर में वृद्धि हो सकती है। शारीरिक शोषण मानसिक स्वास्थ्य विकारों की एक श्रृंखला को ट्रिगर कर सकता है, जिसमें अवसाद, चिंता और अभिघातजन्य तनाव विकार (PTSD) शामिल हैं, जिसका निदान और उपचार वृद्ध वयस्कों में विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है। शारीरिक शोषण के भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव समान रूप से हानिकारक हो सकते हैं, जिससे गरिमा और आत्मसम्मान की हानि, भय और चिंता और सामाजिक अलगाव हो सकता है। शारीरिक शोषण मौजूदा स्वास्थ्य स्थितियों, जैसे मनोभ्रंश, को बढ़ा सकता है और वृद्ध वयस्कों की दैनिक कार्य करने, अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने और उन गतिविधियों में संलग्न होने की क्षमता को कम कर सकता है जिनका वे आनंद लेते हैं। शारीरिक शोषण का संचयी प्रभाव जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय गिरावट, जीवन प्रत्याशा में कमी और स्वास्थ्य सेवा उपयोग में वृद्धि हो सकती है। वरिष्ठ नागरिकों पर शारीरिक दुर्व्यवहार के विनाशकारी प्रभावों को कम करने के लिए शारीरिक दुर्व्यवहार के संकेतों को पहचानना, पीड़ितों को सहायता और संसाधन प्रदान करना तथा अपराधियों को उनके कृत्यों के लिए जवाबदेह ठहराना आवश्यक है।

मुख्य शब्द : *वरिष्ठ नागरिक, शारीरिक स्वास्थय, गंभीर चोटें, शारीरिक शोषण, अभिघातजन्य, आत्मसम्मान और विनाशकारी प्रभाव आदि.*

प्रस्तावना

वरिष्ठ नागरिकों का शारीरिक शोषण एक व्यापक और विनाशकारी मुद्दा है जो दुनिया भर में लाखों वृद्धों को प्रभावित करता है, जिसका उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। जैसे–जैसे वैश्विक आबादी बढ़ती जा रही है, बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार की व्यापकता बढ़ने की उम्मीद है, जिससे यह एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता बन गई है। शारीरिक शोषण, विशेष रूप से, वरिष्ठ नागरिकों के शारीरिक स्वास्थ्य पर गंभीर और दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है, जिसमें चोट, विकलांगता और मृत्यु दर का जोखिम बढ़ जाता है। शारीरिक शोषण का अनुभव करने वाले वृद्धों को कई तरह की शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, जैसे कि फ्रैक्चर, सिर में चोट और आंतरिक चोटें, जिससे पुराना दर्द, सीमित गतिशीलता और कम कार्यात्मक क्षमता हो सकती है। इसके अलावा, शारीरिक शोषण मौजूदा स्वास्थ्य स्थितियों, जैसे कि मनोभ्रंश, मधुमेह और हृदय रोग को भी बढ़ा सकता है, जिससे वृद्धों के लिए अपने स्वास्थ्य का प्रबंधन करना और अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है। शारीरिक नुकसान के अलावा, शारीरिक शोषण वरिष्ठ नागरिकों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डाल सकता है, जिससे चिंता, अवसाद, अभिघातजन्य तनाव विकार (PTSD) और यहां तक कि आत्महत्या के विचार भी पैदा हो सकते हैं। शारीरिक शोषण से जुड़ा आघात और तनाव भी एक वृद्ध व्यक्ति के विश्वास, स्वायत्तता और आत्म–सम्मान की भावना को नष्ट कर सकता है, जिससे उनके लिए मदद मांगना या दुर्व्यवहार के अपने अनुभवों को बताना अधिक कठिन हो जाता है। इन परिणामों की गंभीरता के बावजूद, वरिष्ठ नागरिकों के शारीरिक शोषण की अक्सर रिपोर्ट नहीं की जाती और न ही उसका पता लगाया जाता है, जिससे इस महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दे को रोकने और उसका जवाब देने के लिए जागरूकता, शिक्षा और हस्तक्षेप बढ़ाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य वरिष्ठ नागरिकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर शारीरिक शोषण के प्रभावों की जांच करना है, जिसमें जोखिम कारकों की पहचान करना, पीड़ितों के अनुभवों को समझना और इस कमजोर आबादी पर शारीरिक शोषण के प्रभाव को कम करने के लिए साक्ष्य–आधारित हस्तक्षेपों की जानकारी देना शामिल है।

वरिष्ठ नागरिकों के संदर्भ में शारीरिक शोषण की परिभाषा

वरिष्ठ नागरिकों के संदर्भ में शारीरिक शोषण से तात्पर्य किसी बुजुर्ग व्यक्ति के विरुद्ध बल का जानबूझकर प्रयोग करना है, जिसके परिणामस्वरूप शारीरिक चोट, दर्द या हानि होती है। इस प्रकार का शोषण विभिन्न तरीकों से प्रकट हो सकता है, जिसमें व्यक्ति को मारना, थप्पड़ मारना, धक्का देना, लात मारना या उसकी इच्छा के विरुद्ध शारीरिक रूप से रोकना शामिल है। इसमें देखभाल के दौरान कठोर व्यवहार, दवाओं या शारीरिक प्रतिबंधों का अनुचित उपयोग और यहां तक कि जानबूझकर उपेक्षा जैसे कार्य भी शामिल हैं, जहां बुनियादी जरूरतों को रोका जाता है। वरिष्ठ नागरिक अपनी उम्र से संबंधित शारीरिक कमजोरी, देखभाल के लिए दूसरों पर निर्भरता और अक्सर खुद का बचाव करने या दुर्व्यवहार की रिपोर्ट करने की सीमित क्षमता के कारण शारीरिक शोषण के लिए विशेष रूप से असुरक्षित हैं। दुर्व्यवहार परिवार के सदस्यों, देखभाल करने वालों या भरोसेमंद स्थिति वाले अन्य लोगों द्वारा किया जा सकता है, जो इसे बुजुर्गों के लिए एक गहरा दर्दनाक अनुभव बनाता है। वरिष्ठ नागरिकों पर शारीरिक शोषण के प्रभाव बहुत गहरे हैं, जिससे न केवल दृश्यमान चोटें आती हैं, बल्कि उनके समग्र शारीरिक स्वास्थ्य में भी उल्लेखनीय गिरावट आती है, पहले से मौजूद स्थितियां और भी खराब हो जाती हैं और दीर्घकालिक विकलांगताएं होती हैं। इसके अलावा, मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी उतना ही

गंभीर है, क्योंकि शारीरिक दुर्व्यवहार के आघात से चिंता, अवसाद और असहायता की गहरी भावना पैदा हो सकती है। दुर्व्यवहार का यह रूप न केवल मानवाधिकारों का उल्लंघन है, बल्कि एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दा भी है, जिस पर वरिष्ठ नागरिकों की गरिमा और भलाई की रक्षा के लिए तत्काल ध्यान, हस्तक्षेप और रोकथाम के प्रयासों की आवश्यकता है।

बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार और उसके प्रचलन पर पृष्ठभूमि

बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार दुनिया भर में एक गंभीर और बढ़ती हुई चिंता है, जो हर साल लाखों बुजुर्गों को प्रभावित करती है। यह दुर्व्यवहार का एक रूप है जो शारीरिक, भावनात्मक, यौन, वित्तीय और उपेक्षा सहित कई रूप ले सकता है। बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार विभिन्न परिस्थितियों में हो सकता है, जिसमें बुजुर्ग व्यक्ति का घर, नर्सिंग होम जैसी संस्थाएँ और समुदाय शामिल हैं। बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार की व्यापकता का सटीक रूप से निर्धारण करना मुश्किल है, क्योंकि कई मामले रिपोर्ट नहीं किए जाते हैं। हालाँकि, अध्ययनों से पता चलता है कि हर साल 4% से 10% बुजुर्ग वयस्कों को किसी न किसी तरह के दुर्व्यवहार या उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। इसका मतलब है कि दुनिया भर में लाखों बुजुर्ग वयस्क बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के शिकार हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, नेशनल सेंटर ऑन एल्डर एब्यूज (NCEA) का अनुमान है कि लगभग 10 में से 1 बुजुर्ग वयस्क हर साल बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार का अनुभव करता है। इसमें शामिल हैं—

- शारीरिक शोषण— 1.6 मिलियन वृद्ध वयस्क
- भावनात्मक शोषण— 2.1 मिलियन वृद्ध वयस्क
- यौन शोषण— 500,000 वृद्ध वयस्क
- वित्तीय शोषण— 3.2 मिलियन वृद्ध वयस्क
- उपेक्षा— 1.2 मिलियन वृद्ध वयस्क

विश्व स्तर पर, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) का अनुमान है कि 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के 15.7% लोग किसी न किसी रूप में दुर्व्यवहार या उपेक्षा का अनुभव करते हैं। इसमें शामिल हैं—

शारीरिक शोषण— 11.6%

भावनात्मक शोषण— 13.4%

यौन शोषण— 2.3%

वित्तीय शोषण— 6.8%

उपेक्षा— 11.1%

बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के स्वास्थ्य, कल्याण और जीवन की गुणवत्ता पर गंभीर और दीर्घकालिक परिणाम हो सकते हैं। इससे शारीरिक चोट, भावनात्मक आघात, सामाजिक अलगाव और यहाँ तक कि असमय मृत्यु भी हो सकती है। इसके अलावा, बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार की वजह से आर्थिक और सामाजिक लागत भी बढ़ सकती है, जिसमें स्वास्थ्य सेवा खर्च में वृद्धि, उत्पादकता में कमी और सामाजिक सेवाओं पर दबाव शामिल है।

बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के जोखिम कारक जटिल और बहुआयामी हैं। इनमें शामिल हैं—

- सामाजिक अलगाव और अकेलापन
- संज्ञानात्मक और शारीरिक दुर्बलता
- आघात या दुर्व्यवहार का इतिहास
- देखभालकर्ता का तनाव और बर्नआउट
- दूसरों पर वित्तीय निर्भरता
- सामाजिक समर्थन और संसाधनों की कमी

बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार, इसकी व्यापकता और इसके परिणामों के बारे में जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है। स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों, नीति निर्माताओं, देखभाल करने वालों और समुदाय के सदस्यों को बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार को रोकने और उसका जवाब देने के लिए मिलकर काम करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि बुजुर्गों की सुरक्षा, सम्मान और उनका महत्व है।

वरिष्ठ नागरिकों पर शारीरिक शोषण के प्रभाव

शारीरिक शोषण वरिष्ठ नागरिकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर विनाशकारी प्रभाव डाल सकता है। शोषण के शारीरिक परिणाम गंभीर और लंबे समय तक चलने वाले हो सकते हैं, जबकि भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव समान रूप से हानिकारक हो सकते हैं।

शारीरिक स्वास्थ्य परिणाम

- **चोट और आघात—** शारीरिक शोषण के परिणामस्वरूप चोट लग सकती है जैसे कि खरोंच, कट, फ्रैक्चर और सिर में चोट, जो विशेष रूप से उन वृद्ध वयस्कों के लिए खतरनाक हो सकता है, जिन्हें पहले से कोई चिकित्सा स्थिति हो सकती है या वे ऐसी दवाएँ ले रहे हैं, जिनसे उन्हें रक्तस्राव या चोट लगने का जोखिम बढ़ जाता है।
- **दीर्घकालिक दर्द—** शारीरिक शोषण से दीर्घकालिक दर्द हो सकता है, जिससे गतिशीलता कम हो सकती है, दूसरों पर निर्भरता बढ़ सकती है और जीवन की समग्र गुणवत्ता कम हो सकती है।
- मृत्यु दर का बढ़ा हुआ जोखिम— शारीरिक शोषण को वृद्ध वयस्कों में मृत्यु दर के बढ़ते जोखिम से जोड़ा गया है, विशेष रूप से वे जो कमज़ोर हैं या जिनकी स्वास्थ्य संबंधी कोई समस्या है।
- शारीरिक कामकाज में कमी— शारीरिक शोषण से शारीरिक कामकाज में कमी आ सकती है, जिससे वृद्ध वयस्कों के लिए दैनिक कार्य करना, अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना और उन गतिविधियों में शामिल होना मुश्किल हो जाता है, जिनका वे आनंद लेते हैं।
- कुपोषण और निर्जलीकरण— शारीरिक शोषण से कुपोषण और निर्जलीकरण हो सकता है, खासकर अगर वृद्ध व्यक्ति भोजन और पानी तक पहुँचने में असमर्थ है या उसके दुर्व्यवहार करने वाले द्वारा उसे इन बुनियादी आवश्यकताओं से वंचित किया जा रहा है।

मानसिक स्वास्थ्य परिणाम

- **अवसाद और चिंता—** शारीरिक शोषण से अवसाद, चिंता और अन्य मानसिक स्वास्थ्य विकार हो सकते हैं, जिनका निदान और उपचार वृद्ध व्यक्तियों में विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- **पोस्ट—ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (PTSD)—** शारीरिक शोषण च्वे्क को ट्रिगर कर सकता है, जिससे फ्लैशबैक, बुरे सपने और ट्रिगर्स से बचने की इच्छा हो सकती है जो वृद्ध व्यक्ति को दुर्व्यवहार की याद दिलाते हैं।
- **डर और चिंता—** शारीरिक शोषण डर और चिंता की भावना पैदा कर सकता है, जिससे वृद्ध व्यक्तियों के लिए अपने घरों या समुदायों में सुरक्षित और सुरक्षित महसूस करना मुश्किल हो जाता है।
- **गरिमा और आत्म—सम्मान की हानि—** शारीरिक शोषण से गरिमा और आत्म—सम्मान की हानि हो सकती है, जिससे वृद्ध व्यक्तियों के लिए अपनी पहचान और उद्देश्य की भावना को बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।
- **सामाजिक अलगाव—** शारीरिक शोषण सामाजिक अलगाव की ओर ले जा सकता है, क्योंकि वृद्ध लोग शर्म, अपराधबोध या भय की भावनाओं के कारण अलग—थलग हो सकते हैं और सामाजिक संपर्कों से बच सकते हैं।

वरिष्ठ नागरिकों पर शारीरिक शोषण के प्रभाव दूरगामी और विनाशकारी हो सकते हैं। शारीरिक शोषण के संकेतों को पहचानना, पीड़ितों को सहायता और संसाधन प्रदान करना और अपराधियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराना आवश्यक है। स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं, देखभाल करने वालों और समुदाय के सदस्यों को शारीरिक शोषण को रोकने और यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए कि वृद्धों की सुरक्षा, सम्मान और मूल्य हो।

निष्कर्ष

निष्कर्ष में, वरिष्ठ नागरिकों पर शारीरिक शोषण के प्रभाव बहुत गहरे और दूरगामी हैं, जिसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों पर विनाशकारी परिणाम होते हैं। शोषण के शारीरिक परिणाम गंभीर और लंबे समय तक चलने वाले हो सकते हैं, जबकि भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव समान रूप से हानिकारक हो सकते हैं। शारीरिक शोषण के संकेतों को पहचानना, पीड़ितों को सहायता और संसाधन प्रदान करना और अपराधियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराना आवश्यक है। स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं, देखभाल करने वालों और समुदाय के सदस्यों को शारीरिक शोषण को रोकने और यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए कि वृद्धों की सुरक्षा, सम्मान और मूल्य हो। जागरूकता बढ़ाकर और कार्रवाई करके, हम शारीरिक शोषण के प्रभावों को कम कर सकते हैं और वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य, कल्याण और सम्मान को बढ़ावा दे सकते हैं। अंततः, यह सुनिश्चित करना हमारी

सामूहिक जिम्मेदारी है कि वृद्ध लोग भय, दुर्व्यवहार और उपेक्षा से मुक्त होकर अपना जीवन जी सकें।

सदर्भ ग्रन्थ सुची

1. सालमिनेन–तुओमाला, एम, तियानेन, जे, और पाविलैनेन, ई (2024)– दुर्व्यवहार से प्रभावित वृद्ध वयस्क – उनके मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक भागीदारी के बारे में क्या? एक मिश्रित विधि अध्ययन। व्यवहार विज्ञान, 14(3), 188।
2. अमीरमोहम्मदी, एम, निकपेमा, एन, नेगरंडेह, आर, हघानी, एस, और अमरोल्लाह मजदाबादी, जेड (2023)– भावनात्मक बुजुर्ग दुर्व्यवहार और परिवार के विकासात्मक कार्य के बीच संबंध। नर्सिंग ओपन, 10(4), 2485–2491।
3. बुहरमन, ए.एस, और फुलर–थॉमसन, ई (2022)– बचपन में शारीरिक शोषण का अनुभव करने के दशकों बाद वृद्धों में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य खराब हो जाता है। एजिंग एंड हेल्थ रिसर्च, 2(3), 100088।
4. कोह्न, आर, स्टैंटन, एल, सुरती, जी.एम, और वेरहोक–ओफ़्टेडाहल, डब्ल्य. (2015)– बुजुर्गों के मानसिक स्वास्थ्य पर हिंसा के परिणाम। आर. कोह्न (एड), हैंडबुक ऑफ़ जेरिएट्रिक साइकियाट्री (पृष्ठ 165–178)।
5. जोहानसन, एम, और लोगिउडिस, डी (2013)– बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहारः जोखिम कारकों और रोकथाम रणनीतियों की एक व्यवस्थित समीक्षा। ऑस्ट्रेलियाई और न्यूजीलैंड जर्नल ऑफ साइकियाट्री, 47(8), 731–741।
6. मोस्केडा, एल., और डोंग, एक्स. (2011)– बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार और उपेक्षाः एक वैश्विक समस्या जिसके लिए वैश्विक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। जर्नल ऑफ द अमेरिकन जेरिएट्रिक्स सोसाइटी, 59(10), 1934–1936।
7. ओह, जे, किम, एच.एस, मार्टिंस, डी, और किम, एच (2006)– कोरिया में बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नर्सिंग स्टडीज, 43(2), 203–214।